नाम:- प्रो. भूपेंद्र कुमार दुबे

महाविद्यालय:- दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर

संकाय: - कला संकाय

पदनाम: - सहायक प्राध्यापक

विभाग:- भूगोल विभाग

विषय:- भूगोल

शीर्षक:- नियतिवाद ,संभववाद एवं संभाव्यवाद

(DETERMINISM, POSSIBILISM AND PROBEBILISM)

Edit with WPS Office

नियतिवाद ,संभववाद एवं संभाव्यवाद

(DETERMINISM, POSSIBILISM AND PROBEBILISM)

भूगोल में मानव और वातावरण के संबंधों का विचार को प्राचीन काल से होता रहा है, परंतु 19वीं शताब्दी में जर्मनी में इस पक्ष का गहन अध्ययन तथा चिंतन हुआ , जिसमें वातावरण को सर्व प्रमुख माना गया। 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक 35 वर्षों में इस विचारधारा में फ्रांसीसी भूगोल नेताओं ने मानवीय पक्ष को प्रधानता दे दी। इसके बाद अमेरिका तथा ब्रिटिश भूगोलवेताओं ने दोनों पक्षों का समन्वय कर दिया है।इस प्रकार मानव वातावरण संबंध पर निम्नांकित तीन विचारधाराओं या संकल्पनाओं का प्रतिपादन हुआ है - (1) नियतिवाद या निश्चयवाद (Determinism) - जर्मन विचारको द्वारा, (2) संभाववाद (Possibilism)- फ्रांसीसी विचारको ,द्वारा एवं (3) संभाव्यवाद (Probebilism) - अमेरिका तथा ब्रिटिश विचारकों द्वारा।

नियतिवाद या निश्चयवाद (Determinism)

नियतिवादी संकल्पना के अनुसार प्राकृतिक वातावरण सर्वशक्तिमान है तथा उसका प्रभाव किसी न किसी रूप में मानव के क्रियाकलापों पर अवश्य पड़ता है। इस विचारधारा में मानव को भूतल की उपज माना गया है । किसी भी क्षेत्र में मानव की आकृति ,भोजन, वस्त्र ,मकान ,अर्थव्यवस्था, उद्योग, संस्कृति ,धर्म सामाजिक , राजनीतिक व्यवस्था आदि वातावरण से ही निर्धारित होते हैं । इसलिए इसे वातावरणवाद (Environmentalism) भी कहा जाता है। **नियतिवादी विचारधारा के प्रमुख समर्थक यूनानी विद्वान (हिप्पोक्रेटेज,अरस्तु, स्ट्रेबो आदि) , जर्मनी भूगोलवेत्ता (हमबोल्ट , रिटर, रेटजेल , आदि) ,फ्रांसीसी विद्वान (बोंदा, मोन्टेस्कूय,डिमोलिंस आदि) तथा अमेरिकी भूगोलवेत्ता (ई . सी.सैंपल) है।**

प्राचीन भूगोलवेत्ता हिपोक्रिटस ने(Hippocrates ,420 ई.पू .)अपनी पुस्तक **' वायु , जल और स्थान (On Airs,Water,and Place) में लिखा है ,"यदि कोई व्यक्ति स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन करना चाहता है तो उसे सर्वप्रथम मौसम का अध्ययन करना चाहिए, उसे ठंडी व गर्म हवाओं के प्रभाव तथा जल के गुणधर्म का निरीक्षण करना चाहिए।"अ**रस्तु(Aristotle)के अनुसार मानव की प्रवृत्तियां वातावरण की देन है ।उसके मत में' ठंडे देशों में रहने वाले लोग बहादुर होते हैं ' परंतु उनमें पड़ोसी देशों पर राज्य करने की क्षमता नहीं होती क्योंकि उनमें राजनीतिक संगठन नहीं होता। एशिया महाद्वीप की गर्म जलवायु में रहने वाले लोग कम साहसी या गुलाम प्रवृत्ति के होते हैं।

हीरोडोटस (Herodotus) :-ने मिस्र में संस्कृति एवं सभ्यता के विकास का श्रेय वहां की उपजाऊ मिट्टी, नील नदी का स्वच्छ जल ,स्वच्छ आकाश आदि प्राकृतिक तत्वों को दिया है। जिनके फलस्वरुप अन्य मरुस्थली भागों की अपेक्षा यहां पर सभ्यता का अधिक विकास हुआ। इसी प्रकार

Edit with WPS Office

अरस्तू ने भी अपनी रचना राजनीति में प्राकृतिक तथ्यों का प्रभाव मानव के मानसिक एवं भौतिक गुणों पर बतलाया है। उन्होंने यह व्यक्त किया कि यूरोप की ठंडी जलवायु में व्यक्ति बहादुर होते हैं किंतु तकनीकी चातुर्यता एवं विचारों का उनमें अभाव होता है। जबकि एशिया महाद्वीप की गर्म जलवायु के लोग विचारशील एवं चतुर होते हैं।

रोमन भूगोलवेत्ता स्ट्रेबों:- ने भी यह माना है कि वातावरणीय कारक, भू - उच्चावच, जलवायु ,मिट्टी वनस्पति आदि मनुष्य की क्रियाओ को प्रभावी व नियंत्रित करते हैं। उसने बताया कि शीत प्रदेशों के लोग हस्ट - पुष्ट साहसी और सच्चे होते हैं ,जबकि उष्ण क्षेत्र में रहने वाले लोग आलसी ,कमजोर चालाक तथा कामुक होते हैं।

अरब भूगोलशास्त्रियों ने मानव पर जलवायु के प्रभाव की व्याख्या की है। उनके मतानुसार विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों का शारीरिक गठन ,रहन-सहन, व्यवसाय, भिन्न-भिन्न होता है। उनका मत था कि जिन स्थानों पर पानी की अधिकता होती है, वहां लोग प्रसन्नचित और जिन स्थानों पर शुष्कता होती है ,वहां के लोग क्रोधी स्वभाव के होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि खानाबदोश लोग सदैव खुले वातावरण में रहने के कारण शक्तिशाली, बुद्धिमान और दृढ़ प्रतिज्ञ होती है।

बकल (Buckle) :- ने अपनी पुस्तक" इंग्लैंड की सभ्यता का विकास" ,**(Evollution of British aticivilizon, 1857)** में लिखा कि प्राकृतिक जलवायु , भोजन, मिट्टी, समुद्र, वनस्पति आदि की अनुकूलता ही के कारण ही इंग्लैंड के लोग साहसी, परिश्रमी और राष्ट्रीयता के समर्थक हैं। इनके अनुसार जलवायु ,मिट्टी एवं भोजन तीन ऐसे प्रमुख तत्व हैं ,जो मनुष्य में विभिन्न विचारों को उत्पन्न करते हैं। जिससे एक क्षेत्रीय विशिष्टता या एक क्षेत्रीय गुण निर्धारित होता है। जलवायु, मिट्टी एवं भोजन यह तीनों तत्व परस्पर अन्न्योनाश्रित हैं। **बकल ने जलवायु** को श्रमिकों की कार्य क्षमता , दक्षता आदि पर प्रभाव डालने वाले कारकों में प्रमुख माना है। उष्ण क्षेत्रो में श्रमिकों की कार्य क्षमता कम तथा शीतल क्षेत्र में श्रमिकों में अपेक्षाकृत अधिक स्फूर्ति एवं कार्य क्षमता होती है ।इसी प्रकार जलवायु का श्रमिकों की मजदूरी पर भी प्रभाव पड़ता है ।बकल के अनुसार मनुष्य के विचार , साहित्य ,धर्म, कला आदि के वितरण पर जलवायु का प्रभाव होता है।

हैकल (Haeckle,1867) :- ने नियतिवाद की इस विचारधारा को और आगे बढ़ाया तथा परिस्थिति विज्ञान को जन्म दिया। उसने मनुष्य को अन्य जीवों की तरह माना है, जिस प्रकार अन्य जीव अपने वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करते हैं, मनुष्य भी अपने वातावरण से अनुकूलन एवं घनिष्ठ संबंध स्थापित करता है। **हंबोल्ट (Humboldt) :-**ने प्राकृतिक शक्तियों के प्रभाव को मानव जातियां के शारीरिक लक्षण, उनके रहन-सहन विचार तथा क्रियाकलाप आदि पर स्पष्ट प्रदर्शित किया है। उन्होंने अपनी पुस्तक **कॉसमॉस** में लिखा है कि फिनिशिया और यूनान के लोग समुद्र की समीपता या निकटता के कारण समुद्री यात्रा करने में निर्भीक हो गए और उन्होंने सभी

Edit with WPS Office

समीपस्थ देश में ज्ञान का प्रसार किया ।उन्होंने यह भी लिखा है कि अरब मरुस्थल के लोगों ने सदैव मेघ रहित स्वच्छ आकाश देखा है। इसलिए उन्हें आकाश में ग्रह नक्षत्र को देखने व अध्ययन करने की तीव्र इच्छा हुई।

नियतिवाद की आलोचना: -

(1) पृथ्वी के अनेक भागों में देखा गया है कि समान वातावरण में रहने वाले विविध मानव समूह में समान प्रतिक्रियाएं जागृत नहीं होती। टुण्ड्रा की समान भौतिक दशाओं में भी उतरी कनाडा तथा साइबेरिया में अनेक निवासी एस्किमो, लेप्स तथा सोमोयाड लोगों की आर्थिक और सांस्कृतिक दशाओं में भिन्नता पाई जाती है।

(2) विद्वानों का मत है कि केवल वातावरण की शक्तियों को सर्वशक्तिमान मान लेना मानव सभ्यता के गौरवपूर्ण इतिहास कि अवमानना होगी ।कनाडा व साइबेरिया के शीतल भूभाग में कृषि का विस्तार, शुष्क मरुस्थल में सिंचाई सुविधाओं के विकास से हरे-भरे खेतों का निर्माण ,शीघ्रगामी वायुयानों एवं जलयानों द्वारा एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में कुछ ही घंटे में पहुंच जाना आदि। मानव की शक्ति संगठन एवं बौद्धिक क्षमता के कुछ उदाहरण है। स्वयं कुछ नियतिवादी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि मानव सुरक्षा से प्राकृतिक प्रभावों की अवहेलना कर सकता है।

(3) जैसे ही एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज की रचना होती है उस पर वातावरण का प्रभाव कम होता है। नगरों ,उद्योगों आदि का विकास भौतिक वातावरण की अपेक्षा मानवीय कारकों पर ही निर्भर है। संयुक्त राज्य अमेरिका में मोटर गाड़ी, निर्माण उद्योग या रसायन उद्योग की स्थापना भौतिक वातावरण के कारण नहीं हुई ,बल्कि मानवीय पसंद या चयन के कारण हुई है ।रूस जो भौतिक वातावरण के प्रभाव के कारण अनेक शताब्दियों तक पिछडा रहा वह सन 1917 की क्रांति के पश्चात देखते ही देखते एक महान और विशाल राष्ट्र बन गया।

संभववाद (possibilism)

भूगोल की इस विचारधारा में यह माना जाता है कि प्राकृतिक वातावरण में मनुष्य के लिए कुछ संभावनाएं हैं। मनुष्य अपनी चयन शक्ति (choice) से इन संभावनाओं में से छटकर अपने चरम कल्याण हेतु उनका उपयोग करता है तथा अपनी बौद्धिक क्षमता एवं तकनीकी उपलब्धियां के अनुसार अपने जीवन शैली तथा सामाजिक- आर्थिक प्रारूप निर्धारित करता है इस प्रकार संभववादी विचारकों ने मानवीय चयन शक्ति एवं इच्छा शक्ति को प्रधानता दी है। संभववाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले लूसियान फैब्रिक ने किया था। इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक फ्रांसीसी भूगोल्वेत्ता (ब्लाचे, ब्रूस, डिमांजिया ब्लेचार्ड), अमेरिकी भूगोलवेत्ता (ईसाबोमन ,हंटिंगटन, कार्ल सावर) तथा ब्रिटिश भूगोल्वेत्ता हिबार्टसन , राक्सावी,) आदि हैं। संभववाद की विचारधारा के मुख्य चार रूप मिलते हैं:-

Edit with WPS Office

(1) संभववाद की विचारधारा में वातावरण की शक्तियों को भी स्थान दिया गया है किंतु ,अधिकार नहीं। उनके अनुसार प्राकृति योजना तैयार करती है और मनुष्य अपने बुद्धि एवं प्राप्त सुविधाओं के अनुसार इस पर कार्य करता है।

(2) संभववादी विचारधारा के समर्थक नियतिवादियों की भांति सार्वभौमिक एकता एवं परिवर्तन के सिद्धांतों को मानते हैं। अंतर केवल इतना है कि नियतिवादी प्राकृतिक शक्तियों को प्रथम स्थान देते हैं जबकि संभववादी मनुष्य की क्रियाओ को महत्व देते।

(3) ऐतिहासिक भूगोल में मानव स्वभाव पर भी बल दिया गया है।मानव की एक प्रकार की आदत बन जाने के पश्चात उसका प्रभाव वातावरण पर पड़ता है तथा मनुष्य अपने स्वभाव के अनुरूप या तो वातावरण में परिवर्तन ला देता है या वातावरण की अवहेलना भी कर सकता है।

(4) आधुनिक युग में विज्ञान की उन्नति चरम सीमा पर है। मानव द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधानों की परिणाम स्वरुप ऐसी दशाएं उत्पन्न हो गई है, जिनके द्वारा प्राकृतिक वातावरण को संशोधित ही नहीं किया जा सकता बल्कि उसे परिवर्तित भी किया जा सकता है।

संभववाद की विचारधारा का जन्म और विकास फ्रांस में हुआ था। इसलिए इसे भूगोल की फ्रांसीसी विचारधारा भी कहते हैं। इस विचारधारा का जन्मदाता vidal de la blache था। यद्यपि Blache ने रेटजेल के ग्रंथो और लिखो से प्रेरणा ली थी।फिर भी उसने संभववाद पर बल दिया था। इसमें यह बतलाया गया था,की प्रकृति के द्वारा कुछ संभावनाएं प्रस्तुत की जाती है ,इन संभावनाओं के भीतर मानव अपनी आवश्यकता ,क्षमता एवं रुचि के अनुसार छट सकता है। इस मानवीय छाट के अनुसार किसी क्षेत्र या प्रदेश के साथ वहां के निवासी अपना सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। उनकी मान्यता थी कि मानव अपने वातावरण में रहकर कार्य करना पड़ता है परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह वातावरण का दास है। मानव एक क्रियाशील प्राणी है जिसे वातावरण में परिवर्तन लाने की महान शक्ति प्राप्त हैं। Blache ने कहा कि पहाड़ों पर कृषि योग्य भूमि नहीं पाई जाती फिर भी मनुष्य अपनी सूझबूझ एवं कार्य कुशलता से सीढ़ीदार खेत बनाकर कृषि कार्य करता है। इसी प्रकार वह अपनी तकनीकी कुशलता से साइबेरिया जैसे ठंडे भागों तथा सहारा व थार जैसे गर्म रेगिस्तान में कृषि कार्य कर रहा है। प्रकृति उसे किसी काम के लिए विवश नहीं कर सकती है।

संभववाद की आलोचना:-

(1) जिस प्रकार नियतिवादी विचारको ने वातावरण को सर्वशक्तिमान मानने की भूल की ,इसी प्रकार संभववाद का सबसे बड़ा दोष यह है ,कि इस विचारधारा के समर्थकों ने प्राकृतिक शक्तियों की पूर्णतया अवहेलना करके प्रकृति विजय किनारे लगाए।

Edit with WPS Office

(2) अधिकांश संभववादी विचारक एक और प्राकृतिक शक्तियों तथा उनके प्रभावों को मानवीय शक्तियों के साथ गोण स्थान देते हैं, वहीं दूसरी ओर वे यह भी कहते हैं कि मानव प्राकृतिक शक्तियों की अवहेलना नहीं कर सकता।

संभाव्यवाद (Probebilism)

मानव एवं वातावरण के सहसंबंधों को पूरी तरह समझने में नियतिवाद एवं संभववाद दोनों असफल रहे। इसलिए वर्तमान शताब्दी में कुछ भूगोलवेत्ताओं ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया , जिसे संभाव्यवाद या नव - नियतिवाद कहते हैं। इस संकल्पना में नियतिवाद एवं संभववाद का समन्वय मिलता है। इस विचारधारा के अनुसार मनुष्य को प्रकृति के नियमों का अनुसरण करना ही पड़ता है, किंतु मनुष्य वातावरण के तत्वों के उपयोग के लिए स्वतंत्र है।वह वातावरण के साथ समायोजन या वातावरण में रूपांतरण भी कर सकता है।इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक अमेरिकी भूगोलवेत्ता ग्रिफिथ टेलर एवं कार्ल सावर , रूसी भूगोलवेत्ता डुकुयाचेब तथा ब्रिटिश मानव वैज्ञानिक हरबर्टरसन , और फुलर है।

सर्वप्रथम ग्रिफिथ टेलर ने नियतिवादी विचारधारा में संशोधन कर इस नई विचारधारा का सूत्रपात किया। उसका मत था कि अतिवादी नियतिवाद (crude Determinism) को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया जा सकता। मनुष्य पूरी तरह प्रकृति के अधीन नहीं है। वह अपने बुद्धि, बल ,पराक्रम से प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन करता रहता है। उसमें से अपने उपयोग की वस्तुएं छठ लेता है। साथ ही यह भी सत्य है कि मनुष्य पूरी तरह प्रकृति का विरोध करके अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसे प्रकृति के शाश्वत नियमों को स्वीकार करना होगा। टेलर का मत है कि मनुष्य एवं प्रकृति की प्रक्रियाएं पारस्परिक है। दोनों ही तत्व गतिज है। दोनों परिवर्तनशील है तथा एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं मानव को वातावरण के साथ समायोजन करना पड़ता है।

टेलर ने अपने नव - नियतिवाद की तुलना चौराहे पर खड़े एक राहगीर से की है। जिस प्रकार उसे राहगीर का चौराहे पर खड़े होकर कुछ देर रुक कर यह सूचना पड़ता है कि उसके लिए उन चारों रास्तों में से कौन सा अधिक उपयुक्त है ठीक उसी प्रकार मनुष्य को प्राकृतिक वातावरण द्वारा दी गई अनेक संभावनाओं से अपने लिए सबसे उपयोगी संभावित मार्ग का चुनाव करना पड़ता है। **स्पेट (O.H.K,.spate)** ने भी इस विचारधारा का समर्थन किया है। उसके अनुसार यह नियतिवाद और असंभववाद के बीच का मार्ग है स्पेट ने इसे संभाव्यावाद कहा है । वुल्ड्रिज ने इसे वैज्ञानिक नियतिवाद कहा है क्योंकि मनुष्य को अपनी बुद्धि एवं कार्य क्षमता के अनुसार वैज्ञानिक ढंग से वातावरण के अनुकूलन काम करना पड़ता है। वातावरण के साथ मानव के सामंजस्य का समर्थन ब्लास, ब्रूनस , ईशा वूमेन , टेलर आदि ने किया है। ब्रिटिश भूगोलवेत्ता फ्लेयर ने समाज के भौगोलिक अध्ययन और संसार की समस्याओं विषय पर अपने एक लेख में तार्किक ढंग से अपने विचार प्रस्तुत किए हैं कि मनुष्य वातावरण का केवल दास नहीं है।

Edit with WPS Office

फ्लेयर ने पृथ्वी पर मानवीय प्रदेशों का वर्णन किया है। यद्यपि मानवीय प्रदेश जलवायु और पर्वतों की सीमाओं को लाभ देते हैं ,परंतु इसके अध्ययन में भौतिक प्रदेश की शक्तियों को एकदम भूलाया नहीं जा सकता। फेल्यूर ने माननीय प्रदेश में मुख्य क्षेत्र है जहां मानव के प्रयत्न की छाप उसे प्रदेश पर बिल्कुल स्पष्ट होती है। संसार में ऐसे मानवीय क्षेत्र की सीमा निर्धारित करने में फ्लेयर ने मानवीय प्रयत्न के संचित प्रभाव का दीर्घकालिक विचार किया था जो मानव के वातावरण समायोजन का प्रतिफल कहा जा सकता है। समाज तथा वातावरण पर प्लेयर ने एक पुस्तक "समाज की समस्याएं एवं वातावरण" सन 1948 में लिखी थी।

इस प्रकार नव - नियतिवाद भूगोल की वह विचारधारा है ,जिसमें यह माना जाता है कि मनुष्य अपनी बुद्धि ,शक्ति ,आवश्यकता ,कार्य क्षमता आदि के अनुसार प्रकृति द्वारा निश्चित की गई सीमाओं में ,प्राकृतिक वातावरण का रूपांतरण करता है और उसे समायोजन करता है। अमेरिकी भूगोलशास्त्री हंटिंगटन नियतिवाद तथा कार्ल सवार संभववाद के समर्थक हैं फिर भी इन विद्वानों ने आधुनिक युग में नव नियतिवाद को मानते हुए वातावरण एवं मानव के मध्य समायोजन को महत्व दिया है।

Edit with WPS Office